ईश्वरीय संग का रंग चढ़ा लो
जीवन में मधुरता का रस भर लो
आत्मिक स्नेह से प्यास बुझा लो
सुख -शांति का अमृत रस पी लो
और न कोई संग भाता उसको
जिसने किया समर्पण खुद का प्रभु को
ज्ञान योग की अग्नि जला लो
पाप कर्मो की उसमें आहुति डालो
आत्मा को शुद्ध कंचन बना लो
नया वस्त्र फिर सतयुग में पा लो
सदगुणों से श्रृंगार कर लो
आत्मस्मृति का तिलक लगा लो
पवित्रता का कंगन पहन लो
रूहानियत से नैन सजा लो
आया होली का पर्व सुहाना
लेकर सुंदर खुशियों का गहना
मान लो सब प्यारे प्रभु का कहना
अंतिम जन्म पवित्र जरूर होकर रहना
इस एक जन्म में अपना प्रालब्ध बनाना
21 जन्म नही पड़ेगा फिर रोना पीटना
होली में हो लो प्रभु के संग
सच्ची होली खेलों उन संग

ॐ शांति